International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

"मुगलकालीन महिलाओं पर आर्थिक व सांस्कृतिक प्रभावों का ऐतिहासिक परिदृश्य में अध्ययन : मुगलकाल के विशेष संदर्भ में"

धर्म पाल, शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राजस्थान)
डॉ0 तपेन्द्र सिंह शेखावत, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

प्रस्तावित शोध की भूमिका

मुगल काल में बहुपत्नी प्रथा और जाति द्वारा शासकों एंव सामान्य वर्ग में स्वतः स्वीकृत मानी गयी थी। इसके अतिक्ति महिलाओं को अन्य क्षेत्रों में भी प्रतिबन्धित किया गया था। वे अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वतन्त्र नहीं थीं। तत्कालीन ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भो से ज्ञात होता है कि मुगल युगीन महिलाओं की दशा ठीक नहीं थी।

यद्यपि शाही घरानों की महिला और सम्राटों की बेगमों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं थी। इन महिलाओं के निवास स्थान को 'हरम' कहा जाता था। अकबर के काल में 'हरम' में 5000 स्त्रियों के निवास की व्यवस्था थी। रानियों के लिए वैभवपूर्ण निवास की झलक दिल्ली दुर्ग में स्थापित भव्य बगीचे तथा चकाचौंध करने वाली सुनहरी रंग कर दीवारों से मिलती है। इम्तियाज महल और रंगमहल मुगल महिलाओं के निवास स्थल की व्यवस्था को दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं। परन्तु जनसामान्य वर्ग की महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। वे मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित रहती थी। दिन भर के अथक परिश्रम के बाद भी उन्हें भरपेट भोजन उपलब्ध नहीं था और तन पर वस्त्रों का अभाव था। वे इस अत्याचार को बिना किसी विरोध के सहन करने को विवश थी।

मानव जीवन में शिक्षा का अधिक महत्व है। सामान्यतः सभी मुगल शासक शिक्षा प्रेमी तथा शिक्षा संरक्षक थे। शाही घरानों में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। अकबर ने स्त्री शिक्षा के प्रसार एंव प्रोत्साहन में विशेष रूचि प्रदर्शित की। परन्तु साधारण वर्ग में शिक्षा का प्रचार एंव प्रसार अधिक नहीं हुआ। वह युग कठोर पर्दा प्रथा का युग था। अतः यह रूढ़ी शिक्षा के प्रसार में बाधा बनी। शिक्षा में अध्ययन के विषय थे– फारसी, अरबी, धार्मिक, शिक्षा, इतिहास आदि। महिलाओं को अरबी भाषा का धार्मिक साहित्य विशेषकर कुरान, कण्ठस्थ, कराया जाता था।

मासिर–ए–आलमगीरी में हमें औरंगजेब के समय की महिलाओं की शिक्षा के विषय में विवरण मिलता है जिसमें हरम की सभी महिलायें खुदा की इबादत में तथा कुरान को पढने व प्रतिलेख लिखने में व्यस्त रहती थी। इनके अतिरिक्त संगीत, विभिन्न वाद्ययन्त्र घुड़सवारी, निशानाबाजी, धनुर्विद्या आदि में दक्षता हासिल करती थीं। इस युग में कतिपय महिलाओं ने कुछ क्षेत्रों में अपनी योग्यता का विशेष परिचय दिया जैसे गुलबदन बेगम, गुलरूख बेगम, हमीदा बानों बेगम, माहम अनंगा, सलीम सुल्तान बेगम, जानम बेगम, नूरजहाँ, मुमताज महल, जहाँनारा, रोशनारा, जैबुन्निसा, जीन सुन्निसा, बदरून्निसा, नुरून्निसा बेगम इस समय की विदुशी महिलायें थीं।

इस युग में आर्थिक गतिविधिओं में भी महिलाओं का योगदान रहा। सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री हाथी दांत से साज–सज्जा का सामान, भड़कीले वस्त्र, इत्र, सुबन्ध, खिलौने, ईरानी कालीन आदि वस्तुओं के निर्माण और आयात में इनका योगदान रहा। जनसामान्य वर्ग की महिलाओं के लिए शाही 'हरम' का जीवन कल्पना का ही विषय था। गद्यपि 'हरम' की महिलाओं को जीवन की सुख–सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाता था तो दूसरी ओर उनकी जीवन अपने नियोजित प्रबन्ध और कठोर व्यवस्था के कराण बंदीगृह के जीवन से कम नहीं था। मुगलकाल में हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों में विवाह का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। सामान्यतः हिन्दू विवाह में लड़की के माता–पिता द्वारा सबसे पहले लड़के को पसन्द किया जाता था। जब दोनों पक्षों में आपस में सहमति हो जाती थी तो इस उपलक्ष्य में एक उत्सव का आयोजन किया जाता था। जिसे तिलक या मंगनी कहा जाता था। तदोपरान्त विवाह की तिथि सुनिश्चित की जाती थी। विवाह के दिन वधू के घर में आंगन में एक सुन्दर मण्डप (निर्मित) वनाया जाता था जिसे फूल एवं आम की पत्तियों से सजाया जाता था, विवाह के अवसर पर पास–पड़ोस एवं अन्य चिर–परिचित रिश्तेदार, सम्बन्धी एकत्रित होते तथा, उपस्थित सभी महिलायें वधू के घर में गीत गाने लगती। दूसरी तरफ वर बारात के साथ वधू के घर के लिये प्रस्थान करता। बारात आने के बाद वधू के द्वार पर पूजा की जाती थी। निश्चित समय पर वर और वधू मण्डप में बैठते। वधू का पिता वर को अपनी पुत्री के औपचारिक समर्पण की क्रिया जिसे कन्यादान कहते हैं, करता था। एक स्त्री वर एवं वधू के वस्त्रों के छोरों को गांठ लगाकर बांध देती जिसका आशय दोनों का शारश्वत मिलन होता था। इसके पश्चात पवित्र अग्नि के चारों तरफ श्सप्तपदीश प्रदक्षिणा की क्रिया होती।

पुरोहित के द्वारा पवित्र मन्त्रोच्चारण के साथ ही विवाह पूर्ण होता। विवाह के अवसर पर लोग घरों को अलंकृत एवं सुसज्जित करते थे ।

प्रस्तावित शोध के सोपान

इस काल में महिलाओं के मनोरंजनार्थ विभिन्न प्रबन्ध किये गये थे। उनके मुख्य घरेलू मनोरंजन थे चौपड़, पचीसी, शतरंज, संगीत, नृत्य टॉचर्चों द्वारा प्रकाश करना, कहानियां सुनना, कहना तथा विभिन्न अवसरों पर दरबार में होने वाले मनोरंजन कार्यक्रमों में भाग लेना। मुगलकाल में महिलायें युद्ध स्थलों पर भी जाती थीं। ये महिलायें कभी–कभी राजनयिक और संदेशवाहक का भी कार्य करती थीं। सम्राटों को विभिन्न अवसरों पर परामर्श भी देती थी। मुगल हरम में राजपूत महिलाओं ने शासक के मानसिक स्तर को भी अत्यधिक प्रभावित किया।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

मुगल काल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली युग था। इस समय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने से हम उस समय के समाज और उसकी संरचनाओं को बेहतर समझ सकते हैं। मुगल साम्राज्य में महिलाओं के प्रति दृ ष्टिकोण कैसे विकसित हुआ, और किस प्रकार सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक कारक उनके जीवन को प्रभावित करते थे। मुगलों के शासन में महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं थी। वे व्यापार, राजनीति, कला, साहित्य, और समाज की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थीं। इस अध्ययन से यह जानने को मिलेगा कि उनके लिए आर्थिक और सांस्कृतिक अवसर कैसे बनाए गए और उन्हें किस हद तक सशक्त बनाया गया। महिलाओं के शिक्षा, स्वतंत्रता, और आत्मनिर्भरता पर मुगलकाल के प्रभाव का मूल्यांकन करना, इस समय के सामाजिक सुधारों और उन सुधारों के प्रभावों को उजागर करता है।

मुगलकाल में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों को समझने से न केवल उस युग की समाजिक संरचना का विश्लेषण होगा, बल्कि यह वर्तमान समय में महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण के प्रयासों के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। शोध के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में महिलाओं के जीवन का क्या महत्व था और वह कैसे विभिन्न सामाजिक स्तरीकरणों से गुजर रही थीं।

मुगलों की शाही दरबारों में महिलाओं की भागीदारी ने भारतीय कला और साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। महिलाओं का योगदान कला, संगीत, साहित्य, वास्तुकला और अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों में कैसे था। यह वर्तमान समय में कला और संस्कृति में महिलाओं की भूमिका की समझ को भी बढ़ावा देगा।

इस शोध से एक नया दृष्टिकोण उत्पन्न हो सकता है, जो महिलाओं के ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देगा। यह शोध उन ऐतिहासिक कालों के बारे में जागरूकता और समझ विकसित करने में मदद करेगा, जिनमें महिलाओं के जीवन को पारंपरिक रूप से हाशिए पर रखा गया है।

यह शोध विषय न केवल मुगलकाल की महिलाओं के जीवन का व्यापक और गहरा अध्ययन करता है, बल्कि यह वर्तमान समय में महिलाओं के अधिकारों, सशक्तिकरण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका को समझने के लिए भी एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. मुगल साम्राज्य के दौरान महिलाओं पर पड़ने वाले आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का गहन अध्ययन करना है।
2. मुगलकालीन समाज में महिलाओं का स्थान, उनका सामाजिक और आर्थिक जीवन किस प्रकार प्रभावित हुआ और कैसे वे मुगल साम्राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचनाओं से प्रभावित हुईं।
3. मुगल काल के राजनीतिक और सामाजिक ढांचे का अध्ययन करना और यह देखना कि यह महिलाओं के जीवन पर कैसे प्रभाव डालता था।
4. मुगल साम्राज्य के विभिन्न चरणों में महिलाओं की स्थिति और भूमिका का अध्ययन करना।
5. मुगलकाल में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना, जिसमें व्यापार, कृषि, और घरेलू कार्यों में उनकी भागीदारी का अध्ययन करना।
6. मुगल शासन की नीतियों का महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण या उत्पीड़न पर प्रभाव।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

7. मुगलकालीन संस्कृति, कला और साहित्य का महिलाओं की स्थिति और उनके जीवन पर प्रभाव का अध्ययन।
8. महिलाओं के शिक्षा, पोशाक, और धार्मिक गतिविधियों में भागीदारी के सांस्कृतिक पहलुओं की जांच करना।
9. मुगल समाज में विभिन्न वर्गों की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन, जैसे कि शाही दरबार, ऊँची जाति और सामान्य वर्ग की महिलाएँ।
10. मुगल हरम और महिलाओं की भूमिका को समझना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

मुगलकाल में महिलाओं की भूमिका और स्थिति कई स्तरों पर प्रभावित हुई थी। आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो मुगलों के शासन में महिलाएँ मुख्यतः घरेलू कार्यों में ही सीमित नहीं रहीं, बल्कि वे व्यापार, शिल्प और कृषि में भी भागीदारी करती थीं। हालांकि, उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव सीमित था, फिर भी कुछ मुगल शासकों द्वारा महिलाओं को शाही दरबार और प्रशासन में भागीदारी का अवसर मिला, विशेषकर अकबर के समय में। सांस्कृतिक दृष्टि से, मुगल दरबार ने महिलाओं को कला, साहित्य और स्थापत्य में योगदान देने का अवसर प्रदान किया। धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से, मुगलकाल में महिलाओं पर विभिन्न परंपराओं और धार्मिक बदलावों का प्रभाव पड़ा। पर्दा प्रथा, हिजाब, और महिलाओं के शिक्षा संबंधी नीतियाँ बदलती रहीं, जिससे महिलाओं की स्थिति में उतार–चढ़ाव आया।

मुगलकालीन महिलाएँ समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं, लेकिन उनकी सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता सीमित थी। शाही परिवारों में महिलाओं के लिए कुछ स्वतंत्रता और अधिकार थे, लेकिन सामान्य समाज में महिलाओं की स्थिति परंपरागत रूप से नियंत्रित और सीमित रही। मुगलों के शासनकाल में महिलाओं के जीवन में बदलाव और सुधार की संभावना रही, लेकिन समाज में व्यापक बदलाव के लिए समय और परिस्थिति की आवश्यकता थी।

मुगलकालीन महिलाओं का जीवन और उनकी स्थिति कई पहलुओं से प्रभावित थी। जहाँ एक ओर मुगलों ने दरबारों और शाही परिवारों में महिलाओं को कुछ विशेष अधिकार और सम्मान प्रदान किया, वहीं दूसरी ओर, सामान्य समाज में महिलाओं की स्थिति परंपराओं और धार्मिक विचारधाराओं के प्रभाव में थी। मुगल शासक जैसे अकबर ने महिलाओं को कुछ हद तक स्वतंत्रता दी और उन्हें प्रशासनिक कार्यों में भागीदारी का अवसर भी प्रदान किया, जबकि औरंगजेब के शासन में धार्मिक और सामाजिक कड़ी नीतियाँ महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित करती थीं।

आर्थिक दृष्टिकोण से, मुगलकाल में महिलाओं का योगदान न केवल घरेलू कार्यों तक सीमित था, बल्कि वे विभिन्न क्षेत्रों जैसे कुटीर उद्योग, कपड़ा निर्माण, और व्यापार में भी सक्रिय रूप से शामिल थीं। महिलाएँ विशेष रूप से घरों और महलों में उच्च स्तर की कुटीर शिल्प कला को प्रोत्साहित करती थीं, जिससे मुगलों के शाही जीवन और संस्कृति का आदान–प्रदान हुआ।

मुगल दरबार ने महिलाओं को कला, संगीत और साहित्य में योगदान करने का अवसर दिया। कई मुगली शाही महिलाओं, जैसे सुलतान–ए–जमानी महल की बेगम, ने संगीत, चित्रकला और साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही, मुगलों के समय में स्थापत्य कला और इमारतों के निर्माण में भी महिलाओं की भूमिका को महत्व दिया गया, विशेष रूप से उन महिलाओं ने जो शाही परिवार से संबंधित थीं।

मुगलकाल में महिलाओं के जीवन में कई सकारात्मक परिवर्तन आए, लेकिन यह भी सच है कि कई सामाजिक और धार्मिक परंपराओं ने महिलाओं को घर की चार दीवारों तक ही सीमित कर दिया। पर्दा प्रथा, विवाह के समय में महिलाओं की स्थिति, और उनकी शिक्षा पर कड़े प्रतिबंधों ने उनके समाज में वास्तविक स्वतंत्रता को रोकने का काम किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अबुल फजल, अकबरनामा, अनुवादित ए०एस० बेवरिज, नई दिल्ली, 1979।
2. अबुल फजल, आइने अकबरी, अनुवादित ब्लॉचमैन, कलकत्ता, 1973।
3. अब्दुल हमीद लाहौरी, पादशाहनामा, 1866–72 ।
4. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ का विभागीय पुस्तकालय।
5. इब्नबतूता–किताब–उल–रहला, अनुवादित मेंहदी हुसैन, बड़ौदा 1953।
6. उ०प्र० राज्य अभिलेखागार, महानगर, लखनऊ।
7. एलेक्जेण्डर हैमिल्टन–ए न्यू एगाउन्ट ऑफ दि ईस्ट इन्डीज, लंदन, 1724 ।
8. ट्रैविनियर–ट्रैवल्स इन इण्डिया, लंदन 1889।
9. तुजुक–ए–जहाँगीरी–अनुवादित–रॉजर्स और हैनरी बेवरिज, लंदन 1909–1914 ।